Hoysala Period - होयसल वंश (1000-1300 ई०) या चालुक्य शैली

मैसूर मे चालुक्यो के पश्चात होयसल वंश का शासक हुआ। लगभग 1000 ई० से 1300 ई० पर्यन्त होयसल के बल्लाल शासक इस क्षेत्र मे थाये रहे। इनके शासनकाल मे जो मन्दिर बने उनमे तीन स्थानों के मन्दिर समूह प्रमुख है। प्रथम मन्दिर समुह सोमनाथ पुर मे वीणादित्य बल्लाल ने बनवाया। दुसरा मन्दिर समुह बेल्लूर मे और तीसरा मन्दिर समुह विजय नरसिंह द्वारा द्वार समुड मे बनवाया गया जिसे अब हलेविद कहा जाता है। सोमनाथ पुर मे केशव बेल्लूर मे चेन्नकेशवर और हेलविद मे होयसलेश्वर मन्दिर प्रमुख है।

होयसल मन्दिरो मे चालुक्य कालीन वेसर शैली का ही विकास हुआ। इनका आधार बहुभूजीय है। अत: तारा आकृति वाला है। होयसल (आधुनिक हेलेविड) शासको के काल मे कर्नाटक मे अनेक मन्दिर और उन पर मूर्तियो का निर्माण हुआ। जिनमे बेलूर, सोमनाथ पुर प्रमुख है। होयसल के शासको मे विष्णु वर्धन के समय मे उत्कृष्टतम मन्दिरो तथा मूर्तियो का निर्माण हुआ होयसल मन्दिरो की शैली अत्यन्त कोमल पत्थर के प्रयोग के कारण मन्दिरो तथा मूर्तियो मे सुक्ष्म आलंकारिक सज्जा की सरलता रही है। हलेबिड के केदारेश्वर मन्दिर तथा होयसलेश्वर बेलूर के चेन्नकेशव और सोमनाथ के केशव मन्दिर विशेष उल्लेख नीय है। इन मन्दिरो मे रामायण महाभारत, कृष्ण लीला, तथा पौराणिक कथाओ के दृश्य उकेरे गये है।

① होयसलेश्वर मन्दिर - होयसल वंश की राजधानी द्वार समुड तथा जो आधुनिक मैसूर के निकट स्थित है। होयसलेश्वर का मन्दिर बहुत प्राचीन और वास्तुकला का अनन्त उल्लेखनीय उदाहरण है। जो 12 वे 13 वी शताब्दी का माना जाता है। इसका निर्माण होयसल नरेश नरसिंह प्रथम के कार्यकाल मे सौ वर्षो तक चलता रहा। यह मन्दिर दोहरा व शिखर रहित है। इसमे लम्बी पंक्तियो मे असख्य मूर्तियो के कारण यह मन्दिर विश्व का अद्भुत स्मारक तथा मूर्तियो के रूप मे प्रकट धार्मिक विचार का अद्वितीय भण्डार बन जाता है।

होयसलेश्वर मन्दिर का वास्तु विधान विशिष्ट है ऊँचे चौड़े चबुतरे पर निर्मित इस मन्दिर मे दो देवालयों की योजना है जो उत्तर और दक्षिण गुणनाक्रांत योजना मे नियोजित है सामान्य इसमे गर्भगृह तथा स्तम्भयुक्त कक्ष योजना है। दोनो देवालयों के समीप नंदी मण्डप है। इस मन्दिर के दोनो ओर मार्ग व प्रवेश द्वार के ऊपर 12 फुट लम्बा 13 फुट ऊंचा एक धरण है। इस धरण की चौड़ी सतह पर सुन्दर अलंकरण है। मन्दिर के केन्द्र मे ताड़केश्वर की प्रतिमा अंकित है। जिसके साथ ढोलक और डमरु बजाते हुए अन्य गणो की मूर्तियां चित्रित है। प्रवेश द्वार पर द्वारपालों की मूर्तियां अलंकरणसहित व भावोत्कर्ष के साथ उत्कीर्ण है। बाह्य भाग की सामान्य उचाई 25 फुट है।

अलंकरण – होयसलेश्वर मन्दिर मे अलंकरण की बहुलता है। इसकी दीवारें में चित्रो की बाहुल्ता है। और एक दृश्य में इन्द्र का स्वर्गपुरी चित्रित है। जो कि लता पुष्प से पूर्ण है। इसके केन्द्र मे देवी देवताओं की मूर्तियां है। इनके साथ अलंकृत पट्टिकाओं में लोक कथाएँ, प्राकृतिक दृश्य पशु पक्षी आदि चित्रित है। इन अलंकरणो से चित्र पट का भ्रम होता है। जैसे कि उनको लपेट कर रख दिया गया हो।

होयसलेश्वर मन्दिर की शैली – ये मन्दिर द्रविड़ शैली से प्रभावित है। किन्तु होयसल के शिल्पियो ने पृथक रूप से ही इनका वास्तु विधान है। मैसूर का काष्ठ शिल्प गजदन्त की नक्काशी तथा स्वर्ण शिल्प आज भी जीवित है। इन मूर्तियो में धातु शिल्प व इस प्रकार वस्त्राभुषणों से सुसज्जित किया गया है मानो सोने चांदी के कीमती मोती माणिक जड़े हो। होयसल शिल्पी वास्तु कला से अधिक मूर्ति शिल्पकार थे। होयसल मन्दिरो की अलंकृत मूर्तियो के नीचे उनके निर्माताओं के नाम अंकित है। साथ ही सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का उदाहरण यहां की मूर्तिकला में मिलता है।

डॉ० पूर्णिमा वशिष्ठ
ललित कला विभाग